1 A

① पारदर्शिता से → सरकार में जनता की भागीदारी बढ़ती है।
→ ② भ्रष्टाचार व अनियमितताओं पर रोक लगती है।
③ सूचनाएँ जनता तक पहुँचती है जिससे जवाबदेहिता व लोकतंत्र मजबूत होता है।
→ ④ सरकार के प्रति जनता का विश्वास व सहभागिता बढ़ती है।
→ प्रशासनिक ढाँचा मजबूत होता है व कार्यकुशलता में वृद्धि।

1 B

मानव की प्रवृत्तियाँ → साहस, संयम, न्याय, विवेक

1 C

वस्तुनिष्ठता → निर्णय लेते समय उन आधारों से मुक्त रहना जो व्यक्ति की व्यक्तिगत चेतना में निहित हों जैसे- पूर्वाग्रह, मान्यताएँ, व्यक्तिगत धारणाएँ आदि
→ तार्किक एवं सर्वमान्य आधार पर निर्णय

1 D

नैतिक मूल्य —

मूल्य वे सबसे गहरे नैतिक आदर्श होते हैं जिन्हें समाज की सामान्य समझ से सामाजिक जीवन को श्रेष्ठ व संभव बनाने के लिए आवश्यक निर्मित किया जाता है।

नैतिक मूल्य → सामाजिक/नैतिक नियम

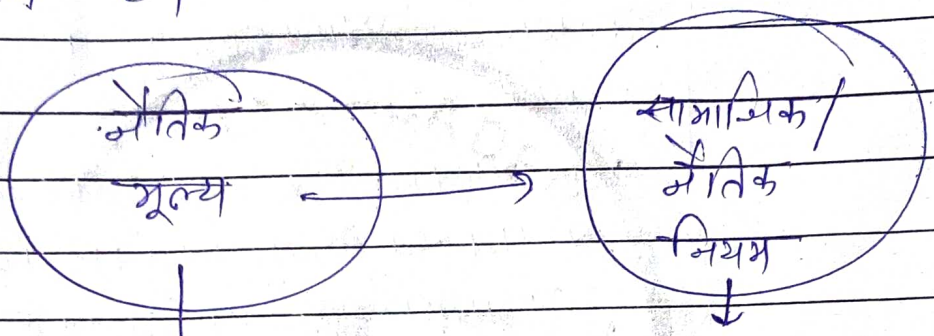

नैतिक मूल्य ↓ आंतरिक → एथिक्स

सामाजिक/नैतिक नियम ↓ बाह्य → मोरैलिटी

1 E

यूथनेशिया सिद्धांत →

(i) गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार → सम्मान जनक मौत

(ii) पीड़ाजनक रोगों से/कष्ट से छुटकारा

(iii) अनु. 21 के तहत जीवन का अधिकार प्राप्त तो मरने का क्यों नहीं

1 F

लेखक — बी. आर. अम्बेडकर

1 G

(i) प्रायः जन्मजात किंतु अभ्यास से निखरती
(ii) सम्बंध → क्षमताओं से
(iii) जीवन की सफलताएँ निर्धारित करती हैं।
(iv) संगीत की कला/स्वर, क्रिकेट की क्षमता

1 H

नैतिक मूल्यों का ~~व्यवहार~~ व्यवहार में अनुपालन आचरण है। यह किसी कृत्य के नैतिक या अनैतिक होने का प्रमुख निर्धारक है क्योंकि कोई कृत्य जब आचरण के स्तर पर नहीं आ जाता तब तक उसका निर्धारण करना मुश्किल।

1 I

(i) दुःख है।
(ii) दुःख का कारण — इच्छाएँ हैं
(iii) दुःख निदान है — दुःख अभिगामिनी प्रतिपदा
(iv) दुःख निदान के ~~का~~ उपाय → आष्टांगिक मार्ग

1 I

करुणा → एक सामान्य भाव जो दूसरों के दुःख के बारे में

- Cognitive
- Emotive
- व्यवहार

तीनों स्तर पर हो

→ परोपकार का मूल कारण

1 K

① नीति निर्धारण
② नीतियों, योजनाओं का क्रियान्वयन
③ प्रत्यायोजित विधान
④ प्रशासकीय न्यायिक निर्णय

1 L

नैतिक संहिता	आचरण संहिता
① सामान्य एवं अमूर्त	① विशिष्ट व मूर्त
② स्थायी (सामान्यतः)	② परिवर्तनशील
③ नैतिक मूल्यों का समावेश	③ नैतिक मूल्य से सुलेगन कार्यों का समावेश

10

अरस्तू

2A

आधुनिक भारत के अग्रदूत और ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजाराम मोहन रॉय का प्रमुख योगदान महिला अधिकारों को लेकर है –

सामाजिक सुधार कार्य →

① 1828 – ब्रह्मसमाज सामाजिक सुधार हेतु

② सतीप्रथा उन्मूलन
↳ 1829 – अधिनियम

③ बहुविवाह का विरोध

④ विधवा पुनर्विवाह का समर्थन

⑤ महिलाओं की शिक्षा संपत्ति का उत्तराधिकार के लिए कार्य

⑥ अस्पृश्यता, अंधविश्वास जातिवाद का विरोध

~~इत्यादि इन्हें~~

2 B

प्लेटो
↓
चार स्तंभ

न्याय | साम्यवाद | शिक्षा चिंतन

① न्याय राज्य का कानूनी रूप नहीं बल्कि नैतिक सद्गुण है।
② आत्मा के समान है।
③ अहस्तक्षेप व्याघातित → एकता → सामंजस्य।
④ न्याय की स्थापना हेतु साहूकार व व्यापारी को विवेक (प्रशासन) द्वारा नियंत्रित किया जाए तभी न्याय की स्थापना होगी क्योंकि

उत्पादक वर्ग → लालच
सैनिक → ~~साहस~~ क्रोध
प्रशासक → विवेक

विवेक → नियंत्रण → उत्पादक
→ सैनिक

इस तरह वर्तमान में भी न्याय स्थापना हेतु विवेकशील प्रशासक वर्ग द्वारा सैनिक व आर्थिक विनियमन किया जाता है।

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

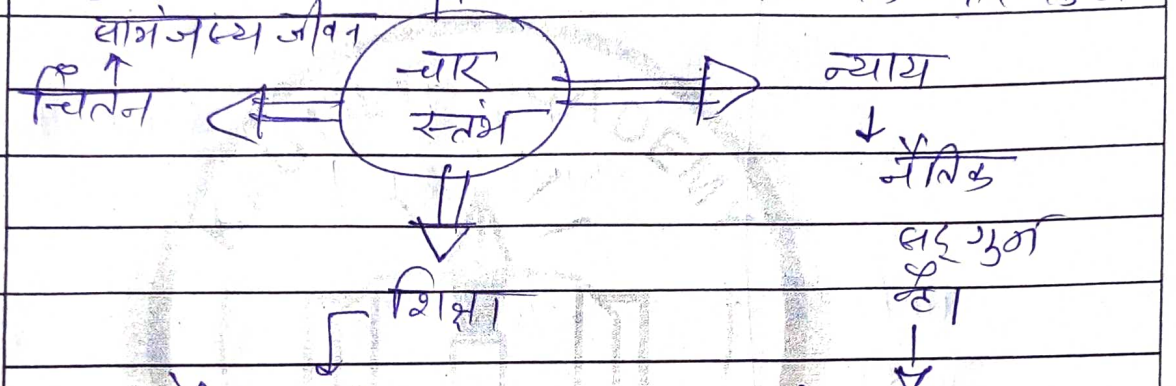

2 D

प्लेटो ने अपनी राज्य सम्बंधी संकल्पना में राज्य के चार स्तंभ बताए हैं —

इस तरह प्लेटो के राज्य के चार स्तंभ एक काल्पनिक और आदर्शोन्मुख राज्य की संकल्पना करते हैं।

प्रश्न संख्या 2 F

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
भारत का नं. 1 संस्थान
सफलता का प्रवेश द्वार

आर्थिक चिंतन
→ The Problem of Rupee में
→ कृषि को अन्य उद्योगों के समान माना जाए।
→ बड़ी व छोटी जोत विभेद समाप्त हो।
→ सहज कर प्रणाली हो।
→ वितरण मूलक समाज की स्थापना।
→ आर्थिक असमानता दूर हो तभी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन संभव होगा।
→ सभी को समान अवसर मिले।

अम्बेडकर के आर्थिक विचार अभी प्रासंगिक हैं जो समावेशी व सतत ~~और~~ विकास के लिए आवश्यक है।

3 b

1. एक संवेदनशील, समाजवादी विचारक को हमेशा नैतिक असंगति या पाखंड (हिप्पोक्रेसी) से बचना चाहिए तभी वह सामाजिक सुधारों को निर्धारित कर सकता है।

वस्तुतः यदि निशांत के विचारों और आचरण में अंतर होगा तो (कथनी - करनी अलग-अलग) समाज पर उनकी बातों, विचारों का प्रभाव सीमित या अप्रभावी हो जाएगा।

इतना ही नहीं इस प्रसंगति का समाज पर नकारात्मक एवं विपरीत प्रभाव पड़ सकता है जैसे - लोगों की यह धारणा विकसित हो सकती है कि जब एक बुद्धजीवी के कथन और कार्य में अंतर है तो हमारे क्यों न हो?

अतः निशांत को अपने बच्चों को भी सरकारी स्कूल में भेजना चाहिए अपनी ग़लती स्वीकारनी चाहिए।